# भारतीय इतिहास लेखन के श्रोत के रूप में पुराण

**डॉ0 कमलेश कुमार गौतम***

पुराणों की परिभाषा से इतिहास के अध्येता भली–भाँति एवं यर्थाततः सुपरिचित है। इसके अन्तर्गत सर्ग, प्रति सर्ग, मन्वन्तर वंश तथा वंशानुचरित इन पंच लक्षणों का समावेश मिलता है यद्यपि कोई भी पुराण समग्ररूप से इन पंच लक्षणों से युक्त नहीं है फिर भी बहुत से ऐसे पुराण हैं जो इन लक्षणों से भली–भाँति परीचित थे। धार्मिक साहित्य पुराणों में तत्सम्बन्धी लिखित राजाओं के वंश तथा वंशानुचरितत अनुमान तथा भौगोलिक ज्ञान इतिहास लेखन की दृष्ट्रि से बहुमूल्य, सामयिक एवं लोकोपकारोन्मुख स्रोत हैं।

समान्यतयाः वैदिक काल के सन्दर्भ में पुराण शब्द का यथोचित अर्थ उत्पत्ति सम्बन्धी कथाओं से ग्रहण किया जाता है। उदाहरणार्थ विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से समाज के विभिन्न वर्णों तथा प्रकृति के विभिन्न वर्गों की उत्पत्ति बतायी जाती है। यहाँ पुराण से हमारा तात्पर्य उन तत्व सम्बन्धी ग्रन्थों से है जिनमें पंच लक्षणों की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। उपलब्ध पुराणों की संख्या 18 मानी गयी है किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि पुराण केवल 18 ही थे। बहुत से पुराण उपपुराण भी हैं, अतः पुराणों से हमारा बोध उन पौराणिक ग्रन्थों से है जो हमें उपलब्ध है। अब प्रश्न यह विचारणीय है कि इतिहास का पुराणों से क्या सम्बन्ध है? कौटिल्य के अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र पुराण तथा उन से सम्बन्धित सभी ग्रन्थों का इतिहास उनके अन्तर्गत रखा गया है। इस तरह हम यह पाते हैं कि मौर्य काल तक आते–आते 'इतिहास' शब्द का अर्थ अपेक्षाकृत व्यापक ही लगता है और उसके अन्तर्गत पुराणों को भी सम्मिलित एवं सुप्रतिष्ठित किया जाने लगा।

पौराणिक धर्म एवं समाज नामक पुस्तक में के इस तथ्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। उसका कथन है कि पौराणिक सन्दर्भो में जो इतिहास शब्द मिलता है लुप्त स्थलों पर वह पुराण का बोध कराता है। जैसे वायु तथा ब्राह्माड पुराण में एक स्थल पर इतिहास कहा गया है। इस प्रकार इतिहास एवं पुराण समानार्थक हो गये। किन्तु यही अर्थ सर्वत्र नहीं मिलता क्योंकि मत्स्य तथा पद्म पुराणों में इतिहास शब्द का प्रयोग पुराणों के लिए नहीं, पौराणिक कथाओं के लिए किया गया है। इतिहास की दृष्टि से वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, मत्स्य, भागवत विष्णु स्कन्द, विष्णु अग्नि इत्यादि पुराण महत्वपूर्ण हैं। ए0के0 बार्डर महोदय ने 'ऐन इन्ट्रोडक्सन टू इण्डियन हिस्ट्रोरियो ग्राफी' में मार्कण्डेय पुराण के भी ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाया है जबकि यू0ए0 घोषाल महोदय ने मार्कण्डेय पुराण की ऐतिहासिक महत्ता को कम स्वीकार किया है। इससे यह भी अर्थ ग्रहण करना चाहिए, उक्त पुराण का इतिहास के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। अन्य पुराण में जैसे–युग पुराण, वामन पुराण, हरिवंश पुराण इत्यादि में भी ऐतिहासिक तथ्य मिलते हैं। स्कन्द पुराण में गुर्जर प्रतिहारों के सम्बन्धित इतिहास पर प्रकाश पड़ता है किन्तु इसे उतना महतवपूर्ण नहीं माना गया है। तत्कालीन आर्थिक इतिहास पर भी स्कन्द पुराण प्रकाश डालते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य पुराण जो न तो 18 पुराणों के अन्तर्गत आते है न उन पुराणों के अन्तर्गत उनकी ओर हमारा ध्यान है, डा0 के0पी0 जायसवाल तथा जी0आर0 शर्मा महोदय ने आकृष्ट किया है। प्रा0 शर्मा ने युग पुराण के गार्गी संहिता के आधार पर यवन आक्रमण के सन्दर्भ में नया आयाम प्रस्तुत किया। इसमें यवनों के आक्रमण का उल्लेख है जो अन्य पुराणों में नहीं है।

''ततः साकेतम्वक्रमयं पांचालान मथुरां, ..... कुसुमध्वजा,

पतंजलि के महाकाव्य में भी इस तथ्य की सूचना मिलती है।

''अरूणद यवनो साकेतम्।

अरूणद यवनों माध्यमिकाय।।''

इसके अतिरिक्त भविष्य पुराण की ऐतिहासिक ग्रन्थ है जो अष्टादश पुराणों तथा उप पुराणों से प्रथक ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में विवेच्य काल से बहुत बाद तक की सदियों की जानकारी प्राप्त होती है। अतः कुछ इतिहासकार इसे अलोच्य काल के बहुत बाद का ग्रन्थ स्वीकार करते हैं और इस प्रकार

* **प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति, दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर**

इसको ऐतिहासिक मानते हैं। इतिहास मनीषियों का एक अन्य समुदाय है जो उत्तरवर्ती रूढ़ियों के तथ्यों को मानता है और इस प्रकार भविष्य पुराणों का इतिहास लेखन की दृष्टि से उपादेय स्वीकार करता है। भारतीय परम्परा के अनुसार व्यास को पुराणों का रचयिताकर्ता माना गया है जबकि यह वैज्ञानिक स्तर पर यह संभव नहीं है। यह माना जा सकता है कि व्यास रचित पुराण भी परमपरा है। यह सभी ग्रन्थ प्रणीत किये गये होगें। डा0 एस0एन0 राय का यह कथन है कि वैदिक काल में पौराणिक लेखन की पृष्ठभूमि तथा आधार स्तम्भ है। आर0सी0 मजूमदार यह स्वीकार करते हैं कि प्रारम्भ में मूलतः एक ही पुराण था। उसी से अन्य पुराणों की उतपत्ति हुई किन्तु ए0डी0 पुसालकर पुराण की कल्पना को तर्क संगत नहीं स्वीकार करते हैं। वे इतना अवश्य मानते हैं कि प्रारमभ में इतिहास पुराण की परमपरा एक ही रही जिसके अन्तर्गत गाथाएँ तथा बंशावलियों की पुराणों का जो स्वरूप कालान्तर में मिलता है वह उसका प्रारम्भिक स्वरूप नहीं था। इस सम्बन्ध में ए0के0 वार्डर महोदय यह स्वीकारते हैं कि गुप्त काल में पुराणों का द्वितीय संस्करण तैयार नहीं किया गया बल्कि सामन्तवादी युग की प्रवृत्तियों के अनुरूप इसे सम्बोधित किया गया।

तत्पश्चात् कुछ अन्य इतिहासकार यह मानते हैं कि गुप्त काल में इसका एक संस्करण परिष्कृत किया गया। वार्डर महोदय, कहते हैं कि संस्करण तैयार करने की बात स्वीकार नहीं है क्योंकि पुराणों में हमें गणराज्यों का उल्लेख नहीं मिलता और जहाँ कहीं भी गणराज्य का उल्लेख हुआ है उनकी स्थिति भी अराजकता से सम्पन्न कर दिया गया हे जबकि 'भारत वर्ष में गणराज्यों की परम्परा बहुत पहले ही विद्यमान थी। जिसकी सूचना हमें एरियन तथा डियोडोरस जैसे विदेशियों के ऐतिहासिक विवरण से भी प्राप्त होता हे। एरियन तथा मेगस्थनीज ने गणराज्यों के साथ–साथ राजतंत्रों का भी उल्लेख किया है जो कुछ भी रहा हो वार्डर के अनुसार, इतना निर्विवाद है कि गुप्तकाल के आस पास इन पुराणों को संशोधित और परिवर्तित किया गया। वार्डर के अनुसार इन पुराणों में हमें गणराज्यों का उल्लेख नहीं मिलता और जहाँ कहीं हुआ भी है वहाँ उन्हें अराजकता से सम्बन्धित कर दिया गया है जबकि भारत वर्ष में गणराज्योंकी परम्परा पहले से ही विद्यमान थी। विदेशी विवरण से ज्ञात होता है कि गणराज्यों की परम्परा नगण्य नहीं थी। एरियन, मेगस्थनीज तथा डियोडोरस के विवरणों में भी गणराज्यों का उल्लेख मिलता है। इतना निर्विवाद विश्वास्य है कि पुराण जिस रूप में आज उपलब्ध होते हैं उनको गुप्त कालों का माना जाता है।

पुराणों में उल्लिखित अर्न्तनिहित तथा विचारर्णाथ तत्वज्ञान है। (1) इन पुराणों में बड़े–बड़े पाठ मिलते हैं और इन पाठों में भेद भी प्राप्त होता है। आर0सी0 मजूमदार का कहना है कि प्रतिलिपि तैयार करने वाले की त्रुटियों से कुछ हद तक इनकी ऐतिहासिकता बाधित हो जाती है। पुराणों की ऐतिहासिक परमपरा का स्वरूप क्या है यह भी विचारणीय विषय है। पुराण का व्यापक अर्थ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मिलता है जिसमें निम्नलिखित ग्रन्थ आते हैं– (1) पुराण (2) इतिवृति (3) आख्यायिका (4) उदाहरण (5) धर्मशास्त्र तथा (6) अर्थशास्त्र। डा0 मजूमदार का कहना है कि इन सबका अर्थ मूल ग्रन्थों से नहीं है जिसे हम पुराण कहते हैं बल्कि पुराणों का अर्थ परमपरागत क्रियाओं तथा वृतात्तों से है।

शामशास्त्री महोदय जिन्होंने पहले अर्थशास्त्र का संपादन किया, ने लिखा है कि इतिवृत्त का अर्थ है, इतिहास। गणपति शास्त्री ने यह बताया कि इतिहास का अर्थ महाकाव्य है किन्तु मजूमदार लिखते हैं कि इतिहास का अर्थ मनुष्यों तथा घटनाओं के परम्परागत विवरण हैं। मजूमदार का यह कथन अत्यधिक समीचीन प्रतीत होता है।

प्राचीनतम आख्यायिका के लिए गणपति शास्त्री का कथन है कि इनमें देवताओं तथा मनुष्यों का वर्णन है। यही अर्थ समीचीन प्रतीत होता है किन्तु इनमें वे महत्वपूर्ण कथाएँ आती हैं जिसे नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा मिलती है। गणपति शास्त्री का कथन है कि धर्मशास्त्रों का सम्बद्ध धर्मसूत्र तथा स्मृति ग्रन्थों से है और अर्थशास्त्र में वे ग्रन्थ आम हैं जिनमें अर्थशास्त्र से सम्बन्धित विषयों का प्रतिपादन मिलता है जैसे कौटिल्य का अर्थशास्त्र। आर0सी0 मजूमदार ने इसका खण्डन किया है। उनके अनुसार तात्पर्य ग्रन्थों से नहीं बल्कि उन परम्पराओं से है जिसमें धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र से सम्बन्धित कथा मिलते हैं। वे परम्पराएँ जिनमें हमें राजनैतिक, आर्थिक पक्ष से सम्बन्धित तथ्य मिलते हैं तथा धार्मिक, नैतिक तथा सामाजिक सम्बन्धी तथ्य मिलते हैं। वही इतिहास से सम्बन्धित हे और कालान्तर में भी

स्वतंत्र विषय बन जाती है। जैसे धर्मशास्त्र में स्मृतियाँ इत्यादि स्वतंत्र विषय का प्रतिपादन करती हैं, उसी प्रकार से पुराण भी स्वतंत्र ग्रन्थ बन गये हैं और इनका मूल्यांकन हम तभी कर सकते हैं जब हम यह समझे कि उनका स्परूप क्या है इस सन्दर्भ में बी0एस0 पाठक ने 'हिस्ट्रीज ऑफ। ''आज इण्डिया पाकिस्तान '' नामक कृति में विस्तृत जानकारी प्रदान की है उनके अनुसार पुराणों की रचना के मूल विवरणों के आधार पर गुथीं हैं जिसमें राजाओं की बंशावलियां तथा महापुरुषों की वृतान्त दिये हुए हैं। पुराणों में जो ऐतिहासिक विवरण मिलते हैं वे प्रारम्भिक काल से चले आ रहे हैं। मजूमदार महोदय का कथन हे कि करीब–करीब बीस प्रधान वंशों का वृतान्तों के सम्बन्धों में पार्जीटर महोदय ने अपनी कृति एसियन्ट इण्डियन डायनेस्टी आफ कलि ऐज'' में विस्तृत जानकारी प्रदान किया हे। इस ग्रन्थ में वंश परम्परा से सम्बन्धित पौराणिक मूल पाठ मिलता है जिसका संकलन ''डायनेसटी आफ दि कलि ऐज'' में कर दिया गया है। इसमें सर्व प्रथम उन्होंने प्राचीन राजवंशों के सम्बन्ध में लिखा है। उनमें राज्यके विषय में विवरण प्रस्तुत करते हैं। कुछ वैदिक साक्ष्यों का भी उद्घृत किया है किन्तु यह बंशावलियां बाद से प्रारम्भ होती हैं।

''डायनिस्टी आफ दि कलियेज'' में ऐतिहासिक काल के वंशों में प्रद्योत वंश, शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग तद् सम्बन्धी यादव आन्ध्र तथा विदिसा एवं क्षेत्रों के राजवंशों के सम्बन्ध में सूचना प्रदान किया है। तृतीय–चतुर्थ शाताब्दी ई0 के समकालिन राजवंशों के बारे में भी जानकारी हमें मिलती है। ऐतिहासिक काल के पहले जो वंश थे, उनकी सौ पीढ़ी तक की जानकारी मिलती है। मजूमदार ने लगभग 500 ई0 पू0 को ऐतिहासिक माना है तथा उनके अनुसार इनसे पहले के जो राजवंश मिलते हैं उनकी प्रमाणिकता किसी अन्य स्वतंत्र साक्ष्यों से सिद्ध नहीं होगी। 500 ई0 पू0 तथा उनके आस–पास से बौद्ध तथा जेन ग्रन्थों में इन राजवंशों की प्राथमिकी मिलती है। ऐतिहासिक में वैसे तो इतिहासकार परीक्षित तथा उनके निकटस्थ शासकों को रखते हैं किन्तु यह मत सर्व ग्राह्य नहीं है।

अनुगंगा प्रयागं च साकेतम् मगधांस्तथा,
येतान, जनपदान् सर्वान् मोक्षनते गुप्त वंशयः।

इस प्रकार स्पष्ट है कि यहाँ पर मोक्षन्ते शब्द भविष्य सूचक है किन्तु इसका अर्थ अतीतकाल से वर्णित किया जाता है। इसी प्रकार से पुराणों में हम यवन दुष्ट अक्रन्ताओं द्वारा पांचाल, मथुरा तथा साकेत पर आक्रमण की सूचना भी पाते हैं, मगध के सन्दर्भ में प्रारमिभक गुप्त राजाओं का विवरण तो मिलता ही है, स्कन्द पुराण में गुर्जर प्रतिहार राजवंश के विषय में छिट–पुट विवरण प्राप्त होता है। मोटे तौर पर हम यह कह सकते हैं कि मौर्योत्तर काल से लेकर गुप्तकाल तक की बंशावलियों के विषय में पुराणों से बहुत कुछ जानकारी प्राप्त होती है। प्रश्न यह उठता हे कि इसके बाद विवरण में तथ्य नहीं उपलब्ध होते हैं। भागवत पुराण, वृहदारण्यता पुराण बाद के हैं इनमें भागवत कथाओं को जोड़ दिया गया है किन्तु वे इतिहास के सन्दर्भ में नहीं हैं।

मजूमदार के अनुसार ऐसा लगता हे कि सूत्रों की परम्परा चौथी ई0 के बाद समाप्त हो जाती है और अब उनकी सामाजिक स्थिति में भी ह्रास होता है। सूत्रों के स्थान पर राजकीय लेखागारों की स्थिति ऐसी थी कि बंशवलियाँ हमेशा सुरक्षित नहीं रह सकती थी क्योंकि बाह्य आक्रमणकारी इसे नष्ट कर देते थे और यही सुरक्षित रहते तो बंशवलियाँ भी सुरक्षित रहती। यह भी कहा जा सकता है, कि समय के साथ–साथ पुराण का स्वरूप पवित्र धार्मिक ग्रन्थ के रूप में महत्वपूर्ण हो गया है। अतः धर्मेत्तर तथा अत्यधिक महत्वपूर्ण नहीं रहे इसलिए लौकिक जीवन से सम्बन्धित बातों का समावेश कम मिलता है।

कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि पुराणों का अध्ययन सामाजिक इतिहास के अध्ययन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार पुराण के सामाजिक प्रवृत्तियों तथा परम्पराओं का क्रमबद्ध विवरण नहीं प्रदान करते किन्तु उनमें ऐसी परम्परायें निहित है जिनके आधार पर हम तत्कालीन प्रमुख सामाजिक प्रवृत्तियाँ एवं धाराओं का विवरण प्राप्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए कलियुग विवरण तथा कलि वर्णन वृतान्त से, हमें प्राचीन काल की समाप्ति केसे हुई ओर नवीन प्रद्धितियों का उदय हुआ, का विवरण पाते हैं

## सन्दर्भ सूची


1. मत्स्यपुराण : *हिन्दी साहित्य सम्मेलन,* प्रयाग 2003।
2. मनुस्मृति : चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, 2009।
3. मनुस्मृति : श्री कुल्लूक भट्टप्रणीत, *'मणिप्रभा'* हिन्दी चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1982 ई0।
4. महाभारत : गीता प्रेस, गोरखपुर, 2015।
5. मार्कण्डेयपुराण : हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2005।
6. यजुर्वेद संहिता : श्री दा0 सातवलेकर, ओंघ, 1996।
7. याज्ञवल्क्य स्मृति : निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई।
8. बौधायन धर्मसूत्र : चौखम्भा संस्कृत सीरिज, वाराणसी।
9. शतपथ ब्राह्मण : अच्युत ग्रन्थमाला, कार्यालय काशी, 2012।
10. अग्निपुराण : आन्दाश्रम ग्रन्थावलि, पूना 1957 ई0।
11. आचारांग सुत्त : सं0 चिन्तास्वामी शास्त्री, वाराणसी, 1895।
12. ऐतरेय ब्राह्मण : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1925 ई0।
13. माण्ड्य ब्राह्मण : चौखम्भा संस्कृत सीरिज, बनारस, 1935 ई0।
14. बुद्ध चरितम् : सूर्यनारायण चौधरी, पूर्णिया, 1948 ई0।
15. Acharya, N.C. : Kulluka on Manu, 1946.
16. Agrawal, V.S. : India as known to Panini, Lucknow, 1953.
17. Achyattan, M. : Educational Practices in Manu, Panini and Kautilya, Trivendrum, 1974.